आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012–2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : ग्यारहवां | अंक : पाँचवां | सितम्बर–2013

बाबा जी आपको
शुभ जन्मदिवस की लाख-लाख बधाई

04 धुंध

(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(मुंबई)

20 सवाल–जवाब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

31 रहम का समुंद्र

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन पर बिठाने से पहले प्रेमियों को हिदायतें

संपादक - **प्रेम प्रकाश छाबड़ा**

मो. 099 50 55 66 71 (राजस्थान)

मो. 098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उपसंपादक - **नन्दनी / माया रानी**

विशेष सलाहकार - **गुरमेल सिंह नौरिया**

मो. 099 28 92 53 04

संपादकीय सहयोगी - **रेनू सचदेवा, सुमन आनन्द व परमजीत सिंह**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 सितम्बर 2013 –138– मूल्य – पाँच रुपये

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

धुंध

स्वामी जी महाराज की बानी

मुंबई

गुरु गुरु, गुरु गुरु गुर बोल, प्रेम से गुरु गुरु, (2)

1. बड़े भाग्य मानस तन पाया, इसका लाभ उठा ले,
जितना नाम ध्या सकता है, उतना नाम ध्या ले, (2)
जितना सोया वही बहुत है, अब तो आँखें खोल,
प्रेम से गुरु गुरु.....

2. जिसने फेरी सच्चे मन से, गुरु नाम की माला,
जितने भेद भ्रम थे मिट गए, ऐसा हुआ उजाला, (2)
गुरु नाम का अमृत पी ले, जीवन में रस घोल,
प्रेम से गुरु गुरु.....

3. ताप-शाप संताप मिटाता, गुरु का पावन नाम,
प्रेम भाव के भूखे सतगुरु, कृष्ण कहो या राम, (2)
जो पल सिमरन में बीते हैं, वे पल हैं अनमोल,
प्रेम से गुरु गुरु.....

4. याद किया जब भी भगतों ने, नंगे पैरों दौड़ा आया,
सदा दीन को गले लगाया, सदा दिया दुर्बल को सहारा, (2)
खैर नाम की पाओ कृपाल जी, 'अजायब' रहा बोल,
प्रेम से गुरु गुरु.....

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल का धन्यवाद है जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। यह भी दया है कि हम उनकी याद में बैठकर भजन बोलते हैं या उनकी महिमा को समझने की कोशिश करते हैं।

प्यारेयो! गुरमेल सिंह ने भजन बोला कि जब भी भक्तों ने परमात्मा को याद किया तो परमात्मा जिस भी पोल पर काम करता है वह नंगे पैरों ही दौड़ पड़ता है। वह हमारी आवाज जरूर सुनता है, वह जानता है कि मेरी याद में कौन बैठा है? उसे किसी संदेशची की जरूरत नहीं होती। उसकी आँखें विशाल होती हैं उसकी आँखें त्रिलोकी से भी पार देखती है।

बच्चा सोया हुआ है माता अपने काम में मशगूल है लेकिन जब बच्चा नींद से जागकर माता के प्यार के लिए रोता है तब माता से भी रहा नहीं जाता। बेशक माता अपने काम में कितनी भी मस्त क्यों न हो वह अपने सारे काम छोड़कर बच्चे को छाती से लगाकर उसकी जरूरत को पूरा करती है।

माता-पिता बच्चे की ममता से बंधे होते हैं, वे बच्चे की जरूरतों को पूरा करते हैं अगर हम भी सच्चे दिल से परमपिता परमात्मा

को याद करते हैं तो परमात्मा भी सारे काम छोड़कर हमारे पास आता है और हमें उठा लेता है। गुरु के दिल में हजारों माता-पिता से भी ज्यादा ममता होती है, वह हमारी पुकार को सुनकर किस तरह रह सकता है?

परमात्मा रहम का समुद्र है हमेशा ही उछलता रहता है, वह सदा हम जीवों पर रहम करता है अगर उसकी दया बंद हो जाए तो दुनिया पलट सकती है। इस शब्द में जो सिफतें बताई गई हैं वे सारी सिफतें मेरे प्यारे गुरु परमपिता कृपाल में थी। मेरा जातिय तजुर्बा है मैंने अपनी आँखों से अपने गुरु में ये सिफतें देखी हैं।

मैं बताया करता हूँ कि जो ताकत कण-कण में व्यापक है मैंने उसे आँखों से नहीं देखा था। मेरे दिल में बचपन से दिन-रात उसकी याद खटकती रहती थी। मैं रात को चारपाई से उठकर जमीन पर लेट जाता था कि तू कण-कण में व्यापक है, मेरा दिल तड़पता है तू मुझे दर्शन दे; मुझे भी शान्ति बख्श।

प्यारेयो! मैं सदा ही बताया करता हूँ कि मुझे कभी कोई परमात्मा कृपाल की बड़ाई करने वाला या निन्दा करने वाला नहीं मिला था, न मैंने कभी आपका नाम ही सुना था। मैं नहीं जानता कि किसने आपको मेरा नाम बताया? मैं बचपन से आपकी याद में बैठा था। आप खुद ही चलकर आए यह आपकी दया थी। आपने संदेशची भेजा जिसने कहा कि आप मेरे घर आ रहे हैं।

जहाँ मेरी परवरिश हो रही थी परमात्मा ने वहाँ सब सहूलियतें दी हुई थी। मैंने जप-तप और कठिन साधन दुनिया का धन इकट्ठा करने के लिए नहीं किए थे। मेरी इच्छा थी कि कण-कण में व्यापक गुप्त ताकत मुझे मिले, मैं उस ताकत को प्रकट आँखों से देख सकूँ।

आज आप राजस्थान में नहरें, सड़के देखते हैं। उस समय ये साधन नहीं थे आसमान में रेत ही उड़ती थी। आज तो मेरे खेत में बाग है पानी और सड़क का साधन है। परमात्मा कृपाल धन्य थे। आप बुढ़ापे में काफी कमजोर थे लेकिन आपने रेत के टिब्बों की परवाह नहीं की और वहाँ जाकर इस दुखी, प्यासी आत्मा की भूख-प्यास मिटाई।

प्यारेयो! मैं बचपन से ही दुनिया के सामान का पुजारी नहीं रहा कि मैं अपने प्यारे गुरुदेव के आगे अपनी जरूरतें रखता। मैंने आपसे मिलाप के वक्त यही कहा, ''बचपन से मेरा दिल-दिमाग खाली है; मैं नहीं जानता कि आपसे क्या कहूँ?'' महाराज जी ने बड़े प्यार से हँसकर कहा, ''मैं खाली जगह देखकर ही तेरे पास आया हूँ। मेरे आस-पास दिमागी कुश्तियां करने वाले बहुत लोग हैं।'' आप जानते थे कि कौन मेरे लिए जगह बनाकर बैठा है, सच्चे दिल से भिखारी बनकर कौन पुकार कर रहा है?

आप महाराज सावन सिंह जी की हिस्ट्री पढ़ते हैं जिसे मैं कई बार सतसंगो में भी बताया करता हूँ। आपने बाईस साल खोज की आप बहुत से महात्माओं के पास गए लेकिन जब वक्त आया तो बाबा जयमल सिंह जी लम्बा सफर करके आपसे मिलने कोहमरी पहाड़ों में गए। उस समय महाराज सावन सिंह जी कोहमरी के पहाड़ों में एस. डी. ओ. के पद पर थे। आप वहाँ सड़क की देखभाल कर रहे थे। महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे, ''जब बाबा जयमल सिंह जी मेरे पास से गुजरे तो मैंने आपको सत श्री अकाल या नमस्ते नहीं बुलाई।''

बीबी रूक्को बाबा जयमल सिंह जी का खाना बनाती थी। वह उस समय बाबा जयमल सिंह जी के साथ थी। बाबा जयमल सिंह

जी ने बीबी रूक्को से कहा, ''हम यहाँ इस सरदार की खातिर आए हैं।'' बीबी रूक्को ने कहा, ''इन्होंने तो आपको सत श्री अकाल भी नहीं बुलाई।'' बाबा जयमल सिंह जी ने कहा कि इसे पता नहीं कि हम इसके लिए यहाँ आए हैं, यह चार दिन बाद सतसंग में आ जाएगा।

चार दिन बाद सावन सिंह जी के किसी मित्र ने आपको जानकारी दी कि यहाँ एक महात्मा आए हुए हैं। वह महात्मा गुरबानी के बहुत अच्छे अर्थ करते हैं, अंदर का भेद बहुत ही खुले दिल से बयान करते हैं। सावन सिंह जी ने कहा, ''मैं जब बाबा जयमल सिंह जी की शरण में गया तो बाईस साल के शक-शकूक एक-एक करके निकल गए, मैंने आपसे नाम की विनती की।''

बाबा जयमल सिंह जी पाँच-छह सौ किलोमीटर चलकर सावन सिंह जी के पास गए। क्या उनके आस-पास और लोग नहीं थे? सन्तों को जो जगह खाली मिलती है या जो उन्हें सच्चे दिल से पुकारता है वह उस जगह अपने आप ही चले जाते हैं।

इसी तरह महाराज सावन सिंह ने भी अपने प्यारे पुत्र कृपाल सिंह को बाहरी मिलाप से सात साल पहले ही अंदर दर्शन देने शुरू कर दिए थे। महाराज कृपाल सीमाप्रान्त (जो अब पाकिस्तान में है) में रहते थे। सीमाप्रान्त का फासला महाराज सावन सिंह जी के आश्रम से छह-सात सौ किलोमीटर का था। कृपाल सिंह जी के दिल में अपने गुरु के लिए बहुत प्यार था। आप अपने भजन में कहते हैं:

मैत्थों चंगियां जुत्तियां तेरियां, मैं तत्ती दूर पावां फेरिया।
हाय छेती आवीं यमां ने घेरी आं, दुःखड़ी सावन दीदार दी आं।।

प्यारेयो! गुरु के लिए दिल में प्यार होता है तभी शिष्य ऐसी विनतियां करता है। आप मेरे लिखे भजन रोज बोलते और सुनते हैं। मेरे लिखे भजन मेरी आत्मा की आवाज हैं। इस आत्मा में नम्रता थी, भिखारी बनकर गुरु को याद किया उसके दर पर बैठा, उसने नाम की खैर डाली। इसलिए मैं सदा ही अपने गुरु का शुक्राना करता हूँ, वह दयालु था। आप सदा कहा करते थे, ''इंसान का बनना मुश्किल है परमात्मा को पाना मुश्किल नहीं, परमात्मा इंसान की तलाश में फिरता है।''

गुरु मेरे जान पिरान, शब्द का दीन्हा दाना।।
शब्द मेरा आधार, शब्द का मर्म पिछाना।।

स्वामी जी महाराज बड़े प्यार से हमारे आगे उस आत्मा का नक्शा खींचकर रखते हैं जो दिन-रात परमात्मा के आगे पुकार करती है कि तू मुझे अपने प्यारे से मिलवा। हम महात्माओं के वेद-शास्त्र, ग्रन्थ पढ़ते हैं उनमें गुरु की, नाम की महिमा होती है। गुरु के बिना नाम नहीं मिलता और नाम के बिना मुक्ति नहीं होती। वेद-शास्त्र पढ़ने से हमारे अंदर विरह और तड़प पैदा होती है फिर हमारी आत्मा पुकार करती है कि हमें भी गुरु रूप हस्ती मिले जो हमें 'शब्द' के साथ जोड़ दे। ऐसी आत्माएं नाम लेकर नाम को रख नहीं देती कि कल जपेंगे; कल-कल करते हुए जिंदगी बीत जाती है।

प्यारेयो! जब ऐसी पवित्र आत्माएं गुरु के संपर्क में आती हैं तो वे गुरु को इस तरह पकड़ लेती है जैसे हिन्दुस्तान में माता-पिता अपनी लड़की की शादी चाहे किसी लड़के से कर दें, लड़की ससुराल में जाकर उस लड़के की हो जाती है। लड़का उसे जिस नाम से भी पुकारे वह उसी में खुश रहती है। ऐसी आत्माओं को जब गुरु मिल जाता है तो वे जो कुछ जप-तप, पूजा-पाठ, रीति-

रिवाज पहले किया करते हैं वे उसे ठप्प करके रख देते हैं। सतगुरु उन्हें जो रास्ता बताता है वही उनका कर्म है वही धर्म है।

पश्चिम के लोग यह सोचते हैं कि माता-पिता अपनी लड़की की शादी लूले-लंगड़े, अंधे या किसी अनपढ़ के साथ कर देते हैं? जैसी लड़की की तालीम और शक्ल होती है माता-पिता उसके लिए वैसा ही लड़का ढूंढ़ते हैं। जब किसी अच्छी आत्मा को नाम मिल जाता है तो वह आत्मा कमाई करती है। अंदर खंडो-ब्रह्माडो में जाकर गुरु शब्द-पावर को काम करता हुआ देखती है तो गुरु का शुक्राना करती है कि किस तरह परमात्मा इंसान के जामें में छिपा हुआ है। यह भेद वेदो-शास्त्रों से और मोल से नहीं मिलता। उसने मुझे गरीब आत्मा समझकर मेरे ऊपर अपने आपको जाहिर किया, मुझे परमात्मा से मिलने का मौका दिया।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''गुरु मुझे प्राणों से भी प्यारे लगते हैं, गुरु ने मुझे 'शब्द' का दान दिया है। 'शब्द' का दान सब दानों से ऊँचा है। यह आत्मा का दान है। अपनी आत्मा किसी के अंदर रख देना छोटी सी कुर्बानी नहीं होती। यह सन्त-सतगुरु की बड़ी से बड़ी कुर्बानी है।'' सहजो बाई कहती हैः

गुरु का बदला दिया न जाई सर्वस्व वारे सहजो बाई।

जब सहजो बाई ने आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों पर्दे उतारकर अंदर सच्चाई को देखा तो आप कह उठी कि मैं अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भी गुरु का बदला नहीं उतार सकती।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज परमात्मा रूप होकर भी अपने गुरु का धन्यवाद करते हुए कहते हैंः

कित मुख गुरु सलाहिए गुरु करण कारण समरथ।

आप कहते हैं कि यह चमड़े का मुँह परमात्मा की महिमा करने के काबिल नहीं है। यह तो परमात्मा का धन्यवाद है जिसने हमें मौका दिया कि हम इस मुँह से उसका शुक्राना करते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

समुद्रं विरोध शरीर हम देखया ईक रस अनूप दिखाई।
गुरु गोबिंद गोबिंद गुरु है नानक भेद न पाई।।

गुरु ने हमें अंदर का भेद दिया, हमने अपने शरीर की साधना की और अंदर खंड-ब्रह्मांड को पार किया। अंदर जाकर देखा कि गुरु और गोबिंद में कोई भेद नहीं ये दोनों एक ही हैं। मैं जब बाहर देखता हूँ तो यह पाँच तत्वों का पुतला है, जब अंदर जाता हूँ तो वह मालिक रूप है। कबीर साहब अपनी बानी में लिखते हैं:

गुरु गोबिंद दोनों खड़े किसके लागू पाए।
बलिहारी गुरु आपणे जिन गोबिंद दिए मिलाए।।

जब सेवक गुरु की बताई हुई युक्ति के मुताबिक अंदर जाकर देखता है कि गोबिंद और गुरु एक ही बराबर खड़े हैं, इनमें कोई फर्क नहीं। गोबिंद तो पहले भी मेरे अंदर था लेकिन मैंने जन्म-मरण के कष्ट उठाए, बिमारियों का हिसाब-किताब दिया। मैं अपने गुरु पर बलिहार जाता हूँ उस पर अपना तन-मन वारता हूँ जिसने मुझे गोबिंद से मिला दिया।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''गुरु मेरी जिंद-जान और प्राण हैं। गुरु ने मुझे 'शब्द' का दान दिया है, 'शब्द' ही मेरी जिंदगी का आधार है। मैं दिन-रात 'शब्द' की कमाई करता हूँ। 'शब्द' के बिना मैं कोई साधना नहीं करता और न ही कोई आसरा रखता हूँ।'' आप तो यह भी कहते हैं:

वडभागी वह जीव है जो करे कमाई शब्द की।

बिन शब्द फिरे भरमातियां न गत मत जानी शब्द की।
वे क्यों आए इस जगत में जिन्हें मिली न पूँजी शब्द की।।

क्या गुण गाऊँ शब्द, शब्द का अगम ठिकाना।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैं गाने-बजाने को पढ़ने-लिखने को 'शब्द' नहीं कहता। 'शब्द' त्रिलोकी के पार सच्चखंड से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारे दे रहा है अगर 'शब्द' कोई लफ्ज़ हो तो उसकी महिमा गाई जा सकती है।''

बिना शब्द सब जीव, धुँध में फिरें भरमाना।।

स्वामी जी महाराज बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं कि आप उसे प्रकाश, आवाज या 'शब्द' कुछ भी कह लें। जिन्हें वह 'शब्द' नहीं मिला आँखे बंद करने पर उनके अंदर इस तरह का अंधेरा है जिस तरह **धुंध** पड़ने पर हम सड़क पर गाड़ी नहीं चला सकते। धुंध में हवाई जहाज एयरपोर्ट पर उतर नहीं सकता क्योंकि रास्ता साफ नहीं होता। 'शब्द' के बिना उनके अंदर की हालत **धुंध** की तरह ही होती है।

स्वामी जी महाराज उस **धुंध** का जिक्र करते हैं कि हम जिस घर में पहले पिता होते हैं फिर वहाँ पर पुत्र, पौत्रा बनकर आ जाते हैं। कभी हम उस घर में पत्नी तो कभी पति बनकर आ जाते हैं। कभी कुत्ता, बिल्ला या सर्प बनकर आ जाते हैं लेकिन हमें एक-दूसरे की पहचान नहीं होती कि पहले हम क्या थे, आज क्या हैं?

प्यारेयो! मैं आपको गुरु नानकदेव जी के जीवन की एक घटना सुनाया करता हूँ। गुरु नानकदेव जी ने एक बूढ़े से कहा, ''देख बाबा! तेरी आयु थोड़ी रह गई है तू भजन किया कर।'' बूढ़े ने कहा, ''अभी मेरे बच्चे छोटे हैं ये बड़े हो जाएं मैं फिर भजन

किया करूंगा।'' आखिर मौत झपट्टा मार लेती है यह किसी का लिहाज नहीं करती। वह बूढ़ा उस घर में बैल बनकर आ गया।

गुरु नानक साहब फिर उसके पास गए और उससे कहा, ''देख! अब तू कितनी मुश्किल में है? तेरे सिर पर सींग हैं मुँह गूंगा है। जिन बच्चों की ममता के कारण तू फिर इस घर में आया है ये अच्छा खाना खाते हैं और तुझे खाने के लिए क्या देते हैं?'' बैल ने गुरु नानकदेव जी से कहा, ''इनमें इतनी ताकत नहीं कि ये दूसरा बैल खरीद सकें इसलिए मैं आपके कहे मुताबिक भजन नहीं कर सकता।'' वह बैल के जामें से छूटकर फिर उस घर में सर्प बनकर आ गया। एक दिन उसका पोता रोने लगा घर के लोग बाहर गए हुए थे। ममता, ममता ही होती है। वह भूल गया कि मैं साँप हूँ, वह उस बच्चे को चुप कराने लगा। इतने में घर के लोगों ने दरवाजा खोला कि अगर हम समय पर नहीं आते तो यह सर्प बच्चे को खा जाता। घर के लोगों ने डंडे से साँप को मार दिया। आखिर वह उस घर की गंदी नाली में कीड़ा बनकर रहने लगा।

गुरु नानकदेव जी के साथ हमेशा मर्दाना रहा करता था। आपने मर्दाना से कहा, ''अब हमें उस सेवक को जबरदस्ती निकालना पड़ेगा।'' मर्दाना ने हँसकर कहा, ''आपकी आप ही जाने।'' गुरु नानकदेव जी मर्दाना को गंदी नाली के पास ले गए और उससे कहा कि हाथ भरकर कीचड़ बाहर निकाल। जब कीचड़ बाहर निकाला तो वह कीड़ा तड़पकर मर गया।

गुरु नानकदेव जी ने मर्दाना से कहा, ''यह वही बूढ़ा है। यह बैल बनकर, सर्प बनकर फिर गंदी नाली का कीड़ा बनकर उसी घर में आया लेकिन इसके बच्चों को पता नहीं था कि यह कौन है? हम जिस दुनिया में फँसे हुए हैं इससे बढ़कर और कौन सी **धुंध** है?''

जिस तरह पप्पू और गुरमेल सिंह मेरे साथ रहते हैं उसी तरह गुरु नानकदेव जी की जिंदगी में ज्यादातर भाई बाला और मर्दाना उनके साथ रहे हैं।

जल पाषान पूजत रहें, रहें कागज अटकाना।।

हम क्यों इस चौरासी के अंधेरे **धुंध** में फँसे हुए हैं? पत्थरों को पूजते हैं। मूर्ति के आगे फूल चढ़ाते हैं मूर्ति को तिलक लगाते हैं माथा टेकते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

कंदू चंदन फूल चढ़ाए, पैरी पे पे बहुत मनाए।
भुखया दे न मरदयां रखे, अंधा झगड़े अंधी सत्थे।।

बहुत से लोग सुबह सूरज की तरफ पानी लेकर मंत्र पढ़ते हैं। पोथियां पढ़ने में सारी जिंदगी लगा देते हैं। पोथियां जो कहती है उसे करने के लिए तैयार नहीं, यह अंधविश्वास की भक्ति है।

हिन्दुस्तान में कुरुक्षेत्र बहुत पुराना तीर्थ है। आमतौर पर जब ग्रहण लगता है तो बहुत से लोग सूरज को पानी देते हैं। चाहे कितनी भी सर्दी क्यों न हो वहाँ स्नान करने के लिए जाते हैं।

इसी तरह गुरु नानकदेव जी भी ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र चले गए। वहाँ लोग सूरज को पानी दे रहे थे। गुरुनानकदेव जी चढ़ते हुए सूरज की बजाए छिपते हुए सूरज को पानी देने लगे क्योंकि आपका गांव करतारपुर बेदियां छिपते सूरज की तरफ था। लोगों ने आपसे पूछा कि आप यह क्या कर रहे हैं? सब लोग तो पूरब की तरफ सूरज को पानी दे रहे हैं लेकिन आप पश्चिम की तरफ पानी दे रहें है। गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''इस तरफ मेरे खेत हैं। मैं अपने खेतों को पानी दे रहा हूँ।''

उन लोगों ने पूछा कि आपके खेत यहाँ से कितनी दूर हैं? गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''मेरा गांव करतारपुर बेदियां यहाँ से तीन-चार सौ मील दूर है।'' उन लोगों ने कहा कि यहाँ से तीन-चार सौ मील दूर पानी कैसे जा सकता है? गुरु नानकदेव जी ने उन लोगों से पूछा, ''सूरज यहाँ से कितनी दूर है? उन लोगों ने कहा कोई अंदाजा नहीं कि सूरज कितनी दूर है?'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''जब मेरा दिया हुआ पानी तीन-चार सौ मील दूर नहीं जा सकता तो आपका दिया हुआ पानी सूरज तक कैसे पहुँच जाएगा?''

गुरु नानकदेव जी ने वहाँ बानी उचारी कि मुक्ति नाम में है। बाहर के रीति-रिवाज में मुक्ति नहीं। चाहे पानी में कितनी भी मधानी चला लें, मक्खन दूध में मधानी चलाने से ही निकलेगा।

मन मत ठोकर खाय, गये चौरासी खाना।।

इंसान का जामा बहुत अमोलक था। हमने इस जामें में 'शब्द-नाम' की कमाई करनी थी, गुरु के बताए हुए रास्ते पर चलना था

लेकिन हम मन के दास बन गए, जो कुछ मन ने कहा वह किया। मनमत पर चलने से ठोकरें मिली। चौरासी में कभी ऊँचे जामें में कभी नीचे जामें में गए। कभी बीमारी की ठोकर लगी तो कभी बेरोजगारी की ठोकर लगी ।

बहु विधि बिपता जीव को, बिन शब्द सुनाना।।

आप प्यार से कहते हैं कि चौरासी से आया था फिर चौरासी के चक्कर में पड़ गया क्योंकि कोई गुरु नहीं मिला अगर गुरु मिला तो उससे 'शब्द' का भेद नहीं लिया। हम बिपता में इसलिए पड़ते हैं क्योंकि हमने अंदर बैठकर शब्द को नहीं सुना, शब्द की कमाई नहीं की। गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैंः

अनेक योनि भरमावे बिन सतगुरु मुक्ति न पावे।
फेर मुक्ति पावे लग चरणी सतगुरु शब्द सुनावे।।

यह तेरी मर्जी है चाहे कितनी भी योनियों में घूमकर आ जा! मुक्ति फिर भी इसी रास्ते से होगी। सतगुरु से 'नाम' लेना पड़ेगा उसके बताए रास्ते पर चलना पड़ेगा, शब्द को सुनना पड़ेगा।

सतगुरु की सेवा बिना, नहिं लगे ठिकाना।।

आप प्यार से कहते हैं अगर सतगुरु मिल गए तो यह सेवा का चोर हो गया इसलिए ठिकाने पर नहीं पहुँचा; विषय-विकारों की सेवा में लगा रहा। महात्मा ने सेवा का बहुत महात्म बताया है। तन, मन, धन और सुरत-शब्द की सेवा है। हमें सेवा का जो भी मौका मिले उससे फायदा उठाना चाहिए। कबीर साहब कहते हैंः

गुरु बिन माला फेरते गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दान हराम है पूछो वेद पुराण।।

अब आप देख ले! यहाँ दिन-रात कार्यक्रम चल रहा है कई प्रेमी नाम जप रहे हैं, कई प्रेमी तन की सेवा कर रहे हैं। जिन प्रेमियों ने लंगर में सहयोग दिया है क्या परमात्मा उनकी आत्मा को फायदा नहीं पहुँचाएगा? महात्मा को सेवक के तन, मन और धन की भूख नहीं होती। परमात्मा ने उन्हें बहुत कुछ दिया होता है। वे सिर्फ सेवक का धन पवित्र करने के लिए साध-संगत में लगवा देते हैं; किसी गरीब की मदद करवा देते हैं।

शब्द भेद बिन सतगुरु, क्या कहें अजाना।।
मन इन्द्री बस में नहीं, तो काल चबाना।।

आप कहते हैं, ''गुरु की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह 'शब्द-नाम' की कमाई करता है और अपने सेवकों को भी शब्द-नाम की कमाई में लगाता है। जिस गुरु के पास 'शब्द-नाम' का

भेद नहीं, जिसका मन-इन्द्रियां बस में नहीं वह दोजक में जाएगा और ऐसे गुरु को मानने वाले सेवक भी दोजक में ही जाएंगे।''

प्यारेयो! जो गुरु खुद भोगों का गुलाम है वह दूसरों को किस तरह परमात्मा से मिलवा देगा, उसके सेवक किस तरह भोगों से बच सकते हैं? परमात्मा पवित्र है। जो परमात्मा को प्रकट कर लेते हैं परमात्मा के साथ मिलाप कर लेते हैं ऐसे गुरु पवित्र बर्तन होते हैं। उनके अंदर मन-इन्द्रियों की और दुनिया की मैल नहीं होती। वे मैल को साफ करने के लिए आते हैं।

बाबा बिशनदास जी बहुत पवित्र थे। आप कहा करते थे, ''जो गुरु भोगों के बस में है ऐसे गुरु को धारण करना तो क्या ऐसे गुरु के दर्शन भी नहीं करने चाहिए।''

सन्तों की बानी में शिष्य की महिमा गाई गई है कि शिष्य बनना बहुत मुश्किल है। शिष्य को अपने आपको साफ करना पड़ता है क्योंकि उसके अंदर परमात्मा ने अपना नाम रखना है। गुरु ने शिष्य के अंदर अपनी बरकते लेकर बैठना है। गुरु के अंदर जो सिफत है शिष्य के अंदर भी वैसी ही सिफत होनी चाहिए।

राधास्वामी सरन ले, सब भाँति बचाना।।
मेहर दया छिन में करें, दे अगम खजाना।।

आप कहते हैं, ''जब हम शब्द-अभ्यासी महात्मा की शरण ले लेते हैं तो हम भी जन्म-मरण के दुखों से बच जाते हैं। **धुंध** से निकलकर परमात्मा के घर पहुँच जाते हैं।''

स्वामी जी महाराज ने इन थोड़ी सी लाइनों में सतगुरु की सिफत की है कि गुरु 'शब्द-नाम' का दान देता है। भाग्यशाली जीवों को ऐसे महात्मा के चरणों में बैठने का मौका मिलता है, वे शिष्य भी धन्य है जो अपने आपको सुधार लेते हैं। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *हमें अभ्यास के दौरान जो दर्द होता है क्या उस दर्द को बर्दाश्त करके हम अपने कर्मों का भुगतान कर रहे होते हैं?*

बाबाजी: सबसे पहले हमने बारीकी से सोचना है कि क्या हम लगातार अभ्यास कर रहे हैं? लगातार अभ्यास करने से हमारे अंदर महारत पैदा हो जाती है और दर्द अपने आप ही खत्म हो जाता है। जब हम रोजाना अभ्यास करते हैं तो दर्द पैरों की तलियों से शुरु होता है इस तरह लगता है जैसे शरीर पर चीटियाँ चल रही हैं तो हमें समझ लेना चाहिए कि हमारी सुरत शरीर से उठने वाली है। पिछले और इस जन्म के बुरे कर्मों से हमारी आत्मा का शीशा धुंधला हो जाता है।

ज्यादा सिमरन करने से आत्मा का शीशा साफ हो जाता है। हमें यह भी बारीकी से देखना चाहिए कि हम अब तो कोई बुरा कर्म नहीं कर रहे? क्या हमारा जीवन सन्तमत के उसूलों के मुताबिक चल रहा है? क्योंकि हमें पिछले जीवन के बारे में पता नहीं होता अगर हम अंदर कुछ देख नहीं रहे तो समझ लें कि हमारी सफाई हो रही है। सतसंगी को ऐसे मौके पर अपना भरोसा या प्यार नहीं छोड़ना चाहिए बल्कि मजबूत इरादे से अपना भजन-अभ्यास करना चाहिए। बुरे कर्मों से छुटकारा पाने के लिए 'शब्द-नाम' की कमाई के अलावा और कोई साधन नहीं। 'शब्द-नाम' की कमाई करने से हमारे बुरे कर्म जल्दी कट जाते हैं और आत्मा साफ हो जाती है।

सतसंगी को सच्चे दिल से अपने गुरु से प्यार करना चाहिए। शुरु-शुरु में तो हमें प्यार करना थोड़ा कठिन महसूस होता है बाद

में यही प्यार तूफानी वेग बन जाता है जिसे रोकना शिष्य के लिए बहुत मुश्किल हो जाता है। ऐसा प्यार भी हमारे बुरे कर्मों को काटने में मदद करता है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

सतगुरु शरण गहो मेरे प्यारे कर्म जुगात चुकाई।

जब हमारे अंदर गुरु का सच्चा प्यार जाग पड़ता है तुफानी वेग का रुप ले लेता है तो हम अभ्यास नहीं छोड़ सकते और हमारे बुरे कर्म प्यार की अग्नि में राख हो जाते हैं। महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा महात्मा चतुरदास यही कहता थाः

सज्जन दा मुख देखन दी पई असां नूं आदत ।
माला तसबी दी हुण जरा रही न हाजत।।

हमारे दिल में गुरु का मुख देखने की लगन लगी हुई है। जिस सतसंगी की ऐसी हालत हो जाती है उसे जब तक अंदर गुरु के दर्शन न हो जाएं वह खाना नहीं खाता।

मैं आमतौर पर यह कहानी सुनाया करता हूँ कि बाबा सावन सिंह जी के दो सतसंगी रामदित्ता और मच्छर बाबा जी की खेती की देखभाल किया करते थे। उन्हें हर रोज अंदर बाबा जयमल सिंह जी के दर्शन होते थे। कभी-कभी गुरु अपने प्रेमी शिष्यों की अजमाईश भी कर लेता है। एक दिन सुबह वे कुएँ में से पानी निकालने लगे तो मच्छर ने रामदित्ता से पूछा, ''क्या आज तुझे बाबाजी के दर्शन हुए हैं?'' उसने कहा, ''नहीं।'' रामदित्ता ने पूछा, ''क्या तुझे बाबा जी के दर्शन हुए हैं?'' उसने कहा,''मुझे भी दर्शन नहीं हुए।'' दोनों ने सोचा! हम काम छोड़कर अभ्यास पर बैठ जाते हैं अगर खेती सूखेगी तो गुरु की सूखेगी। वे दोनों अभ्यास पर बैठ गए, एक घंटे बाद दोनों को दर्शन हुए फिर दोनों ने कुएँ में से पानी निकाला और खेती का काम किया।

जिन्हें गुरु के दर्शन करने की आदत पड़ जाती है उन्हें और कुछ अच्छा नहीं लगता। नामदान के समय गुरु सेवक के अंदर 'शब्द-रुप' होकर बैठ जाता है। जिनमें प्यार या तड़फ होती है वे अंदर गुरु के दर्शन कर लेते हैं।

एक प्रेमी: *पूरे गुरु किस तरह से अभ्यास करते हैं? अब आप कैसे अभ्यास करते हैं?*

बाबाजी: यह बड़ा दिलचस्प सवाल है। हर सतसंगी को गौर से सुनना चाहिए, इस पर अमल भी करना चाहिए। बेशक ये महान आत्माएं प्रभु की तरफ से इस संसार में आती हैं। परमात्मा कण-कण में व्यापक है लेकिन परमात्मा जिस पोल पर काम करता है उसकी ड्यूटी है कि किसे, किस जगह, कब जगाना है? हर किसी का समय मुकर्र होता है वह समय पर आकर उसे जगा देता है।

इन पर पहले माया का पर्दा चढ़ा रहता है लेकिन ऐसा नहीं कि ये गुमराह हो जाते हैं। इन्हें बचपन से ही ज्ञान होता है कि हम संसार में किस काम के लिए आए हैं और हमारा क्या मिशन है? इन्हें बचपन से ही गुरु की तलाश रहती है। इनका दिल सदा ही तड़पता रहता है कि हमें कोई पूरा गुरु मिले। ये सदा अधूरे गुरु से डरते रहते हैं।

समय आने पर इनका मिलाप पूरे गुरु से हो जाता है क्योंकि बर्तन पहले से ही बना बनाया होता है अगर बर्तन साफ हो तो वस्तु डालनी आसान हो जाती है। जमीन तैयार हो तो बीज डालना आसान हो जाता है और बड़ी जल्दी वह बीज फल भी दे देता है अगर जमीन तैयार न हो तो समय लग जाता है। बर्तन साफ न हो तो वस्तु डालने वाला पहले उसे साफ जरूर करेगा। इनमें बचपन से ही कमाल की अन्तर्यामता होती है। रिद्धियाँ-सिद्धियाँ शुरु से

ही इनके आगे हाथ बाँधकर खड़ी रहती है लेकिन ये उन्हें हाथ जोड़कर कहते हैं कि हमें तुम्हारी कोई जरूरत नहीं।

बचपन में जब महाराज कृपाल स्कूल में पढ़ते थे तब एक दिन उन्होंने अपने टीचर से कहा, ''मुझे छुट्टी दे दें मेरी नानी चोला छोड़ने वाली है।'' टीचर ने मज़ाक समझकर कहा, ''क्लास में जाकर बैठ जा, क्या तू अन्तर्यामी है?'' थोड़े समय बाद एक आदमी ने इनके घर से आकर कहा कि पाल को छुट्टी दे दें इसकी नानी इसे याद कर रही है वह संसार छोड़ने वाली है। उसके बाद वह टीचर सदा ही महाराज कृपाल का आदर करता रहा।

इसी तरह मेरे बचपन की कहानी है जो मैंने आज तक किसी को नहीं बताई। उस समय मेरी उम्र आठ साल थी। हमारा पड़ोस मुसलमानों का था वे नेक आदमी थे। एक दिन सुबह मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि पुलिस अजीज को हथकड़ी लगाकर ले जा रही है। मैं सुबह बाहर निकला और अजीज भी बाहर निकला। उसने मुझसे मज़ाक किया। मैंने कहा, ''अजीज! आज तुझे पुलिस पकड़कर ले जाएगी।'' उसने पूछा, ''क्या तूने आज सपना देखा है? सपने तो झूठे होते हैं।'' मैंने कहा, ''मुझे सपनों का तो पता नहीं लेकिन तुझे आज पुलिसवाले हथकड़ी जरूर लगाएँगे।''

तकरीबन दस बजे पुलिसवालों ने अजीज को हथकड़ी लगाकर जेल में बंद कर दिया। थोड़े दिनों बाद उसे छोड़ दिया क्योंकि उसका कोई कसूर नहीं था। किसी ने ऐसे ही शक डाल दिया था कि उसके घर में कोई ऐसी-वैसी चीज़ है।

मेरे पिता के घर में काफी सहूलियतें थी, मेरे पिता अच्छे स्वभाव के अमीर आदमी थे। मैं वहाँ आसानी से हर चीज़ प्राप्त कर

लेता था। यह मेरे बचपन की बात है कि किसी ने मुझसे पूछा, ''क्या कभी नर्क देखा है?'' मैंने कहा, ''हाँ! हमारे घर में नर्क ही है।'' ऐसी हस्तियों के ऊपर न गरीबी का असर पड़ता है और न ही अमीरी का असर पड़ता है। सब महात्मा माया से बचने का उपदेश देते हैं। महात्मा कहते हैं, ''सुई की नोक से हाथी तो निकल सकता है लेकिन अमीर आदमी मालिक के देश नहीं जा सकता।''

बाबा बिशनदास ने इस गरीब अजायब की जिन्दगी की नींव डाली। मुझे अपने घर की जमीन में से जो हिस्सा मिलता और मैं अपनी नौकरी की कमाई भी बाबा बिशनदास जी के चरणों में रख देता था। मैं बताया करता हूँ कि सेवा दे देनी आसान है क्योंकि सेवा लेने वाला धन्यवाद करता है लेकिन बाबा बिशनदास जी का व्यवहार इसके उल्ट था। मैं जब ज्यादा पैसे लेकर आपके पास जाता तब आप मुझे ज्यादा थप्पड़ मारा करते थे। सेवा दे देनी आसान होती है लेकिन थप्पड़ खाने मुश्किल होते हैं। ऐसी महान आत्माएं सन्तों पर अभाव नहीं लाती। उनमें दृढ़ विश्वास और कमाल की श्रद्धा होती है, वे जानते हैं कि सच्चाई जरूर मिलेगी।

हिन्दुस्तान में पंजाब का इलाका पहले से ही तरक्कीशुदा है क्योंकि पंजाब में नहरे पहले आई थी। पंजाब में काफी सहूलियतें थी। आज आप जहाँ बैठे हैं यहाँ आपको बाग दिख रहे हैं पहले यहाँ बीस-बीस मील तक पानी नहीं मिलता था। आज से तीस-पैंतीस साल पहले जब मैं इस जगह आकर बैठा उस समय हर आदमी यह सोचकर परेशान था कि पंजाब में इतनी सहूलियतें छोड़कर यह शख्स यहाँ कैसे बैठा है?

बाबा बिशनदास जी ने कहा था कि यह धार्मिक धरती है। इसे बीकानेर का इलाका कहते थे। यहाँ कोई भी जीव का घात नहीं

करता था, कोई शराब नहीं पीता था। बकरे और गाय का कत्ल नहीं करते थे। आमतौर पर यहाँ के लोगों का झुकाव परमात्मा की तरफ था। यहाँ का राजा न्यायकारी था, प्रजा को अपने बच्चे समझता था और प्रजा भी राजा को अन्नदाता समझती थी। उस समय किसी घर में दरवाजा नहीं होता था। राजा का बहुत डर था।

मैं बाबा बिशनदास जी के कहने के मुताबिक यहाँ आया था। मैं इस ख्याल में था कि बाबा बिशनदास जी ने कहा था, ''तुझे देने वाला यहाँ आएगा।'' मुझे यहाँ बहुत मुश्किलें पेश आईं। मैं यही याद बनाकर बैठा रहा कि कोई मुझे दूसरी मंजिल से ऊपर का भेद देने वाला, रूहानियत देने वाला यहाँ आएगा। मैंने 'दो-शब्द' का भेद लेकर अठारह साल जमीन के नीचे बैठकर अभ्यास किया।

मैंने अपनी जिन्दगी का एक-एक मिनट कीमती समझा। मैंने अपना समय किसी कारोबार, इन्द्रियों के भोगों या मान-बड़ाई में बर्बाद नहीं किया। कबीर साहब कहते हैं, ''अगर कोई प्यासा हो तो वह बड़ी इज्जत से, तड़प से पानी पीता है और पिलाने वाले की भी इज्जत करता है कि तूने मेरे प्राण बचाए हैं।''

महाराज सावन सिंह मिसाल दिया करते थे, ''तानसेन राग का बादशाह था। जिसने राग विद्या सीखनी है वह तो तानसेन के जोड़े भी साफ करेगा लेकिन जिसने राग विद्या नहीं सीखनी उसके जोड़े चाहे तानसेन भी साफ करे वह फिर भी कहेगा कि सोचेंगे!''

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थें, ''मैंने बाईस साल गुरु की खोज़ की। उस समय जो भी महात्मा रूहानियत का काम करते थे मैं सबके पास प्यार से गया। जब मैंने बाबा जयमल सिंह जी का सतसंग सुना तो मेरे बाईस साल के शक-शकूक निकल गए।''

जब मेरी आत्मा का परमात्मा कृपाल मुझे मिला तो मैंने आपसे यह नहीं पूछा कि आप किस जाति से है, आपकी शादी हुई है या नहीं, आपके कितने बच्चे हैं, आप कहाँ रहते हैं? मैंने यही सोचा जिसकी मुझे खोज़ थी वह मुझे मिल गया है।

मेरा आपको ये सब मिसालें देने का भाव यह है कि सन्तों में बचपन से ही कमाल की तड़प होती है। वे अपने गुरु के वचनों को कुलमालिक का वचन समझकर ग्रहण करते हैं। यह महात्मा की मर्जी होती है कि वह संगत के बीच बिठाकर थ्योरी समझाए या अपनी तवज्जो देकर सेवक की सुरत को ऊपर ले जाए। ऐसी महान आत्माओं पर कर्मों का बोझ नहीं होता। उनसे अभ्यास इसलिए करवाया जाता है ताकि वे लोगों को डेमोनस्ट्रेशन दे सके। लोगों के दिल में यह भी बैठ जाए कि इन्होंने कितना अभ्यास किया है, हमें भी अभ्यास करना चाहिए। ऐसी पवित्र आत्माएं कम ही मिलती हैं।

अठारह साल 'दो-शब्द' का अभ्यास करने से मेरे अंदर का रास्ता खुला हुआ था। हुजूर ने मुझे थ्योरी समझाने या संगत में बिठाने की जरूरत नहीं समझी। आप दया करके तवज्जो देकर मेरी सुरत को ऊपर ले गए और जब तक मुनासिब समझा अंदर रखा। उसके बाद आपने कहा कि 16 पी.एस में जाकर अपना अभ्यास करें। रोज़-रोज़ अभ्यास करने से महारत पैदा होती है।

मुझे बचपन से ही आँखें बंद करके बैठने की आदत थी। मैं जमीन पर कपड़ा बिछाकर बैठता था। जब मेरी सुरत संभली कुछ होश आई तब भी मैं जमीन के नीचे ही मकान बनाकर बैठा। इस जगह बहुत गर्म लू चलती थी, मकान के बाहर बैठना बहुत मुश्किल था इसलिए हजूर ने दया करके खुद ही यह मकान बनवाया और

मुझे यहाँ बिठाकर मेरी आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''अब तू यहाँ बैठकर अभ्यास कर। जब जरूरत होगी मैं खुद ही आऊँगा।'' आप खुद ही समय-समय पर यहाँ आते रहे।

एक बार हुजूर प्रेमियों को 'नामदान' दे रहे थे। आपने प्रेमियों को थ्योरी समझाकर मुझसे कहा कि इन्हें सिमरन याद करवा। मैंने आपके आगे विनती की, ''सच्चे पातशाह! कैसी थ्योरी और कैसा सिमरन। मेरी यही अरदास है कि यहाँ जितने आदमी बैठे हैं आप इन्हें अपना असली रुप दिखा दें जो आपने मुझे दिखाया है ताकि कोई झगड़ा न करे कि शंख बजाने से ही परमात्मा मिलता है! सूफी झगड़ा न करे कि मंत्र पढ़कर पानी पीने से ही परमात्मा मिलता है! पंडित झगड़ा न करें कि माथे पर सिंदूर लगाने से ही परमात्मा मिलता है! घर-घर में आपका प्यार हो।'' यह सुनकर हुजूर ने मुझसे कहा, ''लोगों से मेरे कपड़े न फड़वा।''

जब पूरे महात्मा मिल जाते हैं तो ऐसी महान आत्माएं उनसे भेद लेकर समय बर्बाद नहीं करती। उन्हें जो हुक्म मिलता है वे सिर झुकाकर वही करते हैं जो उनके गुरु कह जाते हैं। ऐसी आत्माओं पर बचपन से ही भूख-प्यास का कोई असर नहीं होता अगर वे एक सप्ताह भी अंदर बैठ जाए तो उन्हें भूख-प्यास तंग नहीं करती। उनकी नींद बचपन से ही गायब होती है।

यहाँ सुबह तीन बजे भजन-अभ्यास के लिए घंटी बजती है। जो लोग घर में नियम से तीन बजे भजन-अभ्यास के लिए नहीं उठते यहाँ आकर देखा-देखी भजन पर ज्यादा बैठते हैं तो उनकी सेहत पर बुरा असर पड़ता है। पप्पू यहाँ बैठा है। यह बाहर जब भी बीमार होता है नींद की वजह से ही बीमार होता है।

निनैमो में पप्पू बीमार हो गया। डॉक्टर इसकी देखभाल कर रहे थे लेकिन इसका बुखार नहीं उतरा। मैंने डॉक्टरों को हाथ जोड़कर कहा, ''मैं आपका धन्यवाद करता हूँ आप चले जाएं मैं इसका इलाज कर लूँगा।'' मैंने पप्पू से कहा, ''चुप करके सो जा बोलना नहीं।'' जब यह सोकर उठा तो इसका बुखार उतर गया।

इसी तरह जब हम पहले टूर से वापिस आ रहे थे तो पप्पू को हवाई जहाज में बुखार हो गया। उस समय गुरभाग सिंह भी हमारे साथ था। वह घबरा गया कि मैं दवाई लेकर आता हूँ। मैंने गुरभाग सिंह से कहा कि दवाई रहने दे, तू देख कोई सीट खाली है यह सो जाएगा तो इसका बुखार उतर जाएगा। ऐसा ही हुआ जब यह सोकर उठा तो इसका बुखार उतरा हुआ था। हर आदमी नींद का हमला सहन नहीं कर सकता।

अगर सतसंगी को काम, नींद और आलस न चिपटे तो सतसंगी को भजन करने में मुश्किल नहीं होती। भगवान की यह रीति है कि वह एक बार जिसके लिए दरवाजा खोल देता है फिर उसे विछोड़ा नहीं देता। कबीर साहब की लेखनी में आता हैः

आँख न मुँदू कान न रुंदू काया कष्ट न धारु।
खुल्ले नैन मैं हँस-हँस देखूं सुन्दर रुप निहारु।।

ऐसे महात्मा चाहे खेती करें, चाहे घर का काम करें, चाहे संगत का काम करें यह सब पवित्र और परमार्थ में गिना जाता है। ऐसे महात्मा किसी की बुराई करने की बात सोच भी नहीं सकते। वे पवित्र होते हैं और अपनी संगत को भी पवित्र कर लेते हैं। वे तरे होते हैं और अपनी संगत को भी तार लेते हैं।

आप जानते हैं मुझे बहुत से प्रेमियों के साथ इंटरव्यू करने का मौका मिलता है। हर प्रेमी अपना-अपना अनुभव बताता हैं। कई प्रेमी रुहानियत में दिवालीए होकर आते हैं। परमात्मा कृपाल किसी न किसी तरीके से उन्हें जरूर कुछ देते हैं। कई ऐब छोड़कर जाते हैं। दयालु सतगुरु बहुत कुछ अपने ऊपर भी ले लेते हैं।

आखिर वे अपनी संगत को हर तरीके से पवित्र कर लेते हैं। उनकी कोशिश होती है कि संगत में जितनी भी आत्माएं मेरे संपर्क में आई हैं, मुझे याद करती हैं मैं अपने जीवनकाल में ही इनके अंदर 'शब्द' की धार पैदा कर दूँ और इन्हें मालिक के आगे खड़ा कर दूँ। कहने को बहुत कुछ था लेकिन समय हो गया है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन पर बिठाने से पहले हिदायते

रहम का समुंद्र

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया और अपनी भक्ति करने का मौका भी दिया है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो लोग सन्तों के पास आकर कहते हैं कि दया करें, दया करें; ऐसे लोग भजन के चोर हैं। वे खुद परेशान होते हैं और सन्तों को भी परेशान करते हैं। जो लोग भजन करते हैं सच्चे दिल से परमात्मा को याद करते हैं परमात्मा उनकी पुकार जरूर सुनता है चाहे वे लाखों मील दूर सात समुद्र पार क्यों न बैठे हों!''

हम जो साँस-ग्रास परमात्मा की याद में लगाते हैं वे पल लेखे में हैं। परमात्मा **रहम का समुद्र** है। ऐसा कोई पल नहीं जब उसकी रहमत न हो अगर उसकी रहमत बन्द हो जाए तो उसे रहमान कौन कहेगा अगर वह दया न करे तो उसे दयावान कौन कहेगा?

ये सब सिफतें मेरे पूर्ण गुरु सावन-कृपाल में थी जिन्होंने मेरे स्वपन को साकार किया। बचपन से मेरे दिल में यह तड़प थी कि हे परमात्मा! अगर तू इस समय किसी पोल पर काम कर रहा है तो क्या मेरी आँखें भी उसी तरह तुझे चलते-फिरते हुए देख सकेंगी? मेरी सच्ची तड़प देखकर **रहम का समुद्र** उछला। जब समुद्र उछलता है तो उसमें से मोती, हीरे, सीपियां और छोटे-छोटे पत्थरों के टुकड़े भी आते हैं लेकिन यह हमारे चुनने पर निर्भर है कि हम किस चीज के ग्राहक हैं? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सतगुरु दाता सबना बथू का, पूरा भाग को पावणेया।

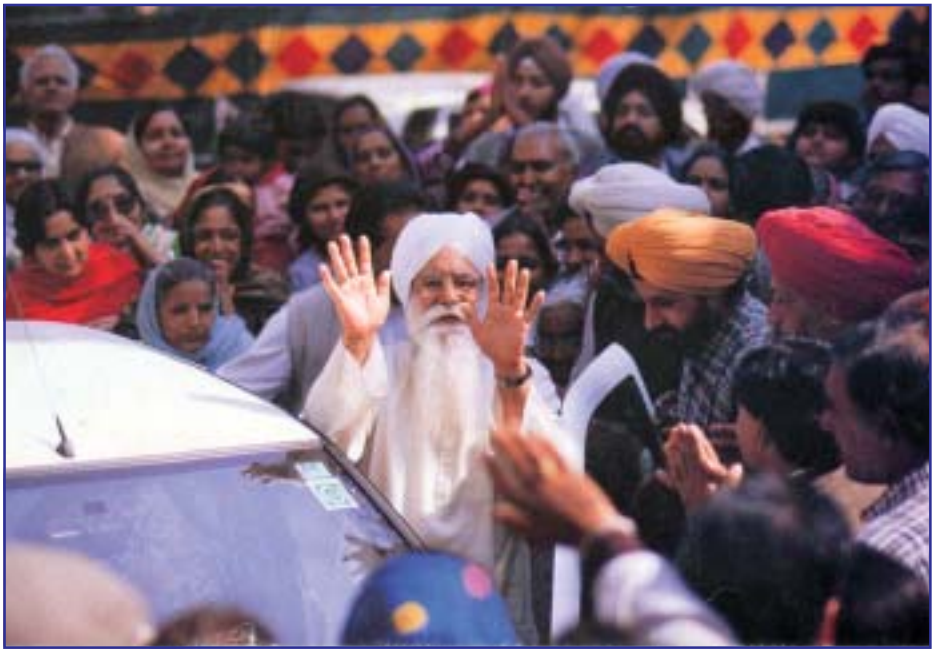

अगर हमारे ऊँचे भाग्य हो तो हम हीरा 'नाम' के ग्राहक बनें। परमात्मा हमारे अंदर बैठा सब कुछ देख रहा है कि हमारे अंदर किस तरह की तड़प है? मुझे परमात्मा सावन के चरणों में बैठने को मौका मिला है। जिन्होंने वह नजारा देखा है कि आप बच्चों में बच्चे, जवानों में जवान, और बूढ़ो में बूढ़े थे।

जब परमात्मा कृपाल कर्णपुर आए तो संगत के कुछ प्रेमियों ने मुझसे विनती की कि महाराज सावन संगत को खुद टोकरी में से रोटियां दिया करते थे क्या महाराज कृपाल हमें उसी रूप में रोटियां देंगे? मैंने कहा, ''विनती करना मेरा फर्ज है मेरा दिल मानता है कि आप हमारी पुकार सुनेंगे।'' मैंने महाराज कृपाल से जाकर कहा कि संगत के जिन प्रेमियों ने महाराज सावन को रोटियां बाँटते हुए देखा है वे प्रार्थना कर रहे हैं कि आप उसी रूप में उन्हें फुल्का बरताएं।

बाबा जी,
शुभ जन्मदिन की लाख-लाख बधाई

महाराज कृपाल ने हँसकर मुझसे कहा, ''लंगर में से टोकरी उठाकर ले आ।'' मैं टोकरी उठाकर ले आया। जिन्होंने सावन के समय का वह नजारा देखा था उनमें से कोई यह नहीं कह सका कि सावन या कृपाल अलग थे। आप उसे सावन कह लें! कृपाल कह लें! राम कह लें! कृष्ण कह लें! नानक कह लें! कबीर कह लें!

वही कबीर वही सतनामा सब सन्तन की वही पछान।

फर्क इतना होता है पहले के सन्त भक्ति करके भक्ति रूप हो गए, परमात्मा में मिलकर परमात्मा रूप हो गए। वे अब हमें शब्द-धुन के साथ नहीं जोड़ सकते। इसलिए सन्त कहते हैंः

वक्त गुरु को खोज तेरे भले की कहूं।

वक्त का गुरु, वक्त का डॉक्टर, वक्त का मेजिस्ट्रेट ही हमें फायदा पहुँचा सकता है। यह वह जगह है जहां परमात्मा कृपाल ने अपने मुबारक पवित्र चरण रखे थे। इन चरणों के लिए देवी-देवता भी लोचते हैं। हमारे ऊँचे भाग्य हैं कि आज हम उनकी याद में बैठे हैं। आप चाहे यहां अभ्यास करें चाहे अपने घरों में अभ्यास करें, अभ्यास को कभी बोझ न समझे, प्रेम-प्यार से करें।

अभ्यास पर बैठने से पहले पाँच पवित्र नामों को अच्छी तरह याद कर लें। अंदर उठने वाली दुनिया की लहरों को शान्त करें, मन को जवाब देकर अभ्यास में बैठें अगर हम इस तरह से रोज-रोज अभ्यास में बैठेंगे तो थोड़े दिनों में ही कामयाब हो जाएंगे।

सन्त यह नहीं चाहते कि वे अपने शिष्यों को अभ्यास में फँसाए। सन्त कहते हैं अगर आप प्रेम-प्यार से थोड़े दिन अभ्यास करेंगे तो अपनी तरक्की रोज-रोज देखेंगे। आप आँखें बंद करके प्रेम-प्यार से अपना अभ्यास शुरू करें।

***